महादेवी वर्मा

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» महादेवी वर्मा: परिचय एवं साहित्यिक योगदान

प्रश्न 1 (आसान). महादेवी वर्मा का जन्म किस वर्ष और स्थान पर हुआ था?
उत्तर – महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फ़ारुख़ाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

प्रश्न 2 (आसान). उन्हें किस काव्य संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था?
उत्तर – उन्हें 'यामा' काव्य संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।

प्रश्न 3 (मध्यम). महादेवी वर्मा को छायावाद के चार स्तंभों में से एक क्यों माना जाता है? अन्य तीन स्तंभों के नाम भी बताइए।
उत्तर – महादेवी वर्मा को छायावाद के चार स्तंभों में से एक माना जाता है क्योंकि उन्होंने छायावादी काव्यधारा को अपनी गहन भावनात्मक और रहस्यात्मक कविताओं से समृद्ध किया। अन्य तीन स्तंभ सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). महादेवी वर्मा की गद्य रचनाएँ उनके काव्य से किस प्रकार भिन्न हैं और उनके गद्य लेखन का क्या महत्व है?
उत्तर – महादेवी वर्मा की काव्य रचनाएँ मुख्य रूप से आंतरिक पीड़ा, भक्ति और रहस्यात्मकता को व्यक्त करती हैं, जबकि उनकी गद्य रचनाएँ (जैसे 'शृंखला की कड़ियाँ', 'स्मृति की रेखाएँ') सामाजिक सरोकारों, नारी-विमर्श और शोषित-पीड़ित वर्ग के जीवन को दर्शाती हैं। उनके गद्य लेखन का महत्व इस बात में है कि उन्होंने समाज के हाशिये पर पड़े लोगों को अपनी रचनाओं में नायकत्व दिया और हिंदी साहित्य में संस्मरणात्मक रेखाचित्र विधा को एक नई पहचान दी।

» भक्तिन रेखाचित्र का उद्देश्य और केंद्रीय भाव

प्रश्न 5 (आसान). 'भक्तिन' साहित्य की कौन सी विधा है?
उत्तर – रेखाचित्र

प्रश्न 6 (आसान). भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?
उत्तर – लछमिन (लक्ष्मी)

प्रश्न 7 (मध्यम). भक्तिन को अपना नाम लक्ष्मी क्यों पसंद नहीं था?
उत्तर – क्योंकि उसका जीवन समृद्धि से कोसों दूर था और वह अपने नाम के विरोधाभास को जानती थी।

प्रश्न 8 (कठिन). भक्तिन के जीवन का कौन-सा प्रसंग पितृसत्तात्मक समाज की चुनौतियों को दर्शाता है?
उत्तर – उसकी संपत्ति हड़पने के लिए रिश्तेदारों का षड्यंत्र और बेटियों के लिए उसकी लड़ाई।

» भक्तिन का नामकरण और प्रारंभिक पहचान

प्रश्न 9 (आसान). भक्तिन का असली नाम क्या था?
उत्तर – लछमिन (लक्ष्मी)

प्रश्न 10 (आसान). भक्तिन को अपना असली नाम किसी को बताना क्यों पसंद नहीं था?
उत्तर – क्योंकि उसका नाम 'लक्ष्मी' था, जिसका अर्थ धन-समृद्धि है, लेकिन उसके जीवन में केवल गरीबी और दुख थे, जो नाम के विपरीत था।

प्रश्न 11 (मध्यम). महादेवी वर्मा ने 'लछमिन' को 'भक्तिन' नाम किस आधार पर दिया?
उत्तर – उन्होंने लछमिन के गले में कंठी माला देखी, जो भक्ति का प्रतीक होती है, और उसी से प्रेरित होकर यह नाम दिया।

प्रश्न 12 (कठिन). भक्तिन का नामकरण उसके चरित्र की किस विशेषता पर प्रकाश डालता है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – भक्तिन का नामकरण उसके स्वाभिमान और अतीत से मुक्ति पाने की इच्छा पर प्रकाश डालता है। वह अपने 'लक्ष्मी' नाम के विरोधाभास को जी रही थी, जहाँ नाम तो समृद्धि का था, पर जीवन अभावों से भरा था। इस कारण उसे यह नाम बोझ लगता था। जब महादेवी वर्मा ने उसे 'भक्तिन' नाम दिया, तो यह उसके भक्तिभाव और साधु जैसे त्यागपूर्ण जीवन शैली से मेल खाता था। इससे उसे एक ऐसी पहचान मिली, जो उसके आंतरिक सत्य को दर्शाती थी, न कि बाहरी दिखावे को। इस नाम को पाकर उसे अपने अतीत की कड़वी स्मृतियों से मुक्ति और एक नई शुरुआत का अनुभव हुआ।

» भक्तिन का बचपन और विमाता का व्यवहार

प्रश्न 13 (आसान). भक्तिन की विमाता उससे क्यों ईर्ष्या करती थी?
उत्तर – भक्तिन के पिता उसे बहुत प्यार करते थे, इसलिए उसकी विमाता उससे ईर्ष्या करती थी।

प्रश्न 14 (आसान). भक्तिन का गौना कितने वर्ष की आयु में हुआ था?
उत्तर – भक्तिन का गौना नौ वर्ष की आयु में हुआ था।

प्रश्न 15 (मध्यम). पिता की मृत्यु का समाचार भक्तिन को कैसे मिला और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – विमाता ने पिता की मृत्यु का समाचार उसे तब भेजा जब सब कुछ खत्म हो चुका था। ससुराल से सास ने भी झूठ बोलकर उसे भेजा। यह जानकर भक्तिन बहुत दुखी हुई और उसने ससुराल आकर अपनी सास को खूब खरी-खोटी सुनाई।

प्रश्न 16 (कठिन). भक्तिन के बचपन की किन घटनाओं ने उसके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
उत्तर – भक्तिन की इकलौती बेटी होना, विमाता की ईर्ष्या, छोटी उम्र में विवाह और गौना, पिता की मृत्यु के बाद धोखा और ससुराल में सास व जिठानियों द्वारा शोषण – इन सभी घटनाओं ने उसके व्यक्तित्व को बहुत मजबूत, मेहनती और थोड़ा विद्रोही बना दिया।

» भक्तिन का गृहस्थ जीवन और संघर्ष (कन्या जन्म)

प्रश्न 17 (आसान). भक्तिन को कितनी बेटियां हुई थीं?
उत्तर – भक्तिन को तीन बेटियां हुई थीं।

प्रश्न 18 (आसान). सास और जिठानियां भक्तिन से क्यों नाराज़ रहती थीं?
उत्तर – सास और जिठानियां भक्तिन से बेटियां होने के कारण और संपत्ति पर उनके अधिकार का खतरा देखकर नाराज़ रहती थीं।

प्रश्न 19 (मध्यम). भक्तिन के पति का उसके प्रति कैसा व्यवहार था, और इससे क्या परिणाम निकला?
उत्तर – भक्तिन का पति उसे बहुत प्यार करता था और उसने कभी उस पर हाथ नहीं उठाया। इसी प्रेम के बल पर भक्तिन ने ससुराल वालों से अलग होकर अपना घर बसा लिया था।

प्रश्न 20 (कठिन). भक्तिन के गृहस्थ जीवन में 'दंड-विधान' की क्या भूमिका थी और क्या यह सफल रहा?
उत्तर – भक्तिन के गृहस्थ जीवन में 'दंड-विधान' का मतलब था उसे मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान करना, ताकि वह टूट जाए और पति से भी अलग हो जाए। लेकिन पति के अटूट प्रेम के कारण यह 'दंड-विधान' असफल रहा, और उल्टे भक्तिन को पति का और अधिक प्यार मिला।

» पति का प्रेम और अलगौझा

प्रश्न 21 (आसान). भक्तिन के पति ने उसे जिठानियों के सामने कैसे सहारा दिया?
उत्तर – भक्तिन के पति ने उसे कभी उंगली भी नहीं उठाई और हमेशा उसका पक्ष लिया।

प्रश्न 22 (आसान). अलगौझा का मतलब क्या है?
उत्तर – अलगौझा का मतलब है संपत्ति का बँटवारा करके अलग हो जाना।

प्रश्न 23 (मध्यम). भक्तिन के पति का प्रेम उसके लिए क्यों महत्वपूर्ण था?
उत्तर – पति के प्रेम ने भक्तिन को जिठानियों के भेदभाव से लड़ने और आत्मनिर्भर बनने की शक्ति दी, जिससे वह अपनी संपत्ति बढ़ा पाई।

प्रश्न 24 (कठिन). आपके अनुसार, क्या भक्तिन का अलगौझा करने का निर्णय सही था? अपने उत्तर का कारण बताओ।
उत्तर – हाँ, भक्तिन का अलगौझा करने का निर्णय सही था क्योंकि इससे वह जिठानियों के उत्पीड़न से मुक्त हो गई और अपनी मेहनत और समझदारी से अपनी संपत्ति को सुरक्षित और बढ़ा सकी, जो उसके और उसकी बेटियों के भविष्य के लिए ज़रूरी था।

» भक्तिन की विधवा अवस्था और संपत्ति के लिए संघर्ष

प्रश्न 25 (आसान). भक्तिन के पति की मृत्यु किस उम्र में हुई थी?
उत्तर – छत्तीस वर्ष से कुछ अधिक.

प्रश्न 26 (आसान). भक्तिन ने अपनी बड़ी बेटी के पति को क्या बनाया?
उत्तर – घर जमाई.

प्रश्न 27 (मध्यम). भक्तिन के जेठ-जिठौत उसकी संपत्ति क्यों हड़पना चाहते थे?
उत्तर – भक्तिन के हरे-भरे खेत और मोटी-ताजी गाय-भैंस देखकर उनके मन में लालच आ गया था, उन्हें लगा कि अब भक्तिन अकेली है तो वे आसानी से उसकी संपत्ति ले सकते हैं.

प्रश्न 28 (कठिन). भक्तिन ने 'हम कुकुरी बिलारी न होयँ' कहकर क्या साबित किया और यह किस संदर्भ में कहा गया था?
उत्तर – भक्तिन ने यह कहकर अपनी मज़बूती और स्वाभिमान दिखाया। जेठ-जिठौत उसे दूसरा विवाह करने के लिए उकसा रहे थे, ताकि उसकी संपत्ति पर उनका हक हो जाए, लेकिन भक्तिन ने उनके धोखे में आने से इनकार कर दिया और बताया कि वह किसी बिल्ली या कुत्ते की तरह कमज़ोर नहीं है जिसे कोई भी बहका ले.

» बेटी का विधवा होना और पंचायत का अन्यायपूर्ण फैसला

प्रश्न 29 (आसान). भक्तिन की बड़ी बेटी विधवा क्यों हो गई थी?
उत्तर – यह दुर्भाग्यवश हुआ, कहानी में इसके पीछे का कोई विशेष कारण नहीं बताया गया है।

प्रश्न 30 (आसान). भक्तिन के जिठौतों ने क्या षड्यंत्र रचा?
उत्तर – उन्होंने अपनी संपत्ति पर कब्ज़ा करने के लिए अपनी विधवा भतीजी का विवाह अपने तीतर लड़ाने वाले साले से कराने की कोशिश की।

प्रश्न 31 (मध्यम). पंचायत ने किस बात को समस्या का मूल कारण बताया और क्या फैसला सुनाया?
उत्तर – पंचायत ने 'कलियुग' को समस्या का मूल कारण बताया और फैसला सुनाया कि चूंकि लड़की और लड़का एक कोठरी से निकले हैं, उन्हें पति-पत्नी के रूप में ही रहना होगा।

प्रश्न 32 (कठिन). पंचायत के इस अन्यायपूर्ण फैसले का भक्तिन और उसकी बेटी के जीवन पर क्या गहरा प्रभाव पड़ा? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – इस फैसले के कारण बेटी को एक अनचाहा पति थोप दिया गया, जिससे उसका जीवन नारकीय हो गया। परिवार की सारी ज़मीन-जायदाद, गाय-ढोर बर्बाद हो गए क्योंकि दामाद कोई काम नहीं करता था। अंततः लगान न चुका पाने के कारण भक्तिन को गाँव छोड़कर शहर आना पड़ा और सेवक के रूप में काम करना पड़ा।

» ग्रामीण जीवन से शहर की ओर प्रस्थान

प्रश्न 33 (आसान). जमींदार ने भक्तिन के साथ क्या व्यवहार किया?
उत्तर – जमींदार ने लगान न दे पाने पर भक्तिन को दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा।

प्रश्न 34 (आसान). भक्तिन शहर क्यों आई?
उत्तर – भक्तिन गरीबी, अन्याय और जमींदार के अपमान से तंग आकर शहर में काम ढूंढने आई।

प्रश्न 35 (मध्यम). भक्तिन के शहर आने को लेखिका ने 'जीवन के चौथे और संभवतः अंतिम परिच्छेद का अथ' क्यों कहा है?
उत्तर – लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि भक्तिन का गाँव का जीवन एक अध्याय था जो अपमान और अन्याय के साथ खत्म हो गया। शहर आकर उसने एक नया जीवन शुरू किया, जिसे लेखिका ने उसके जीवन का चौथा और शायद आखिरी बड़ा बदलाव माना।

प्रश्न 36 (कठिन). ग्रामीण जीवन से शहर की ओर प्रस्थान की घटना भक्तिन के चरित्र की किस विशेषता को उजागर करती है?
उत्तर – यह घटना भक्तिन के जुझारूपन, स्वाभिमान और हार न मानने वाले स्वभाव को उजागर करती है। तमाम मुश्किलों और अपमान के बावजूद उसने परिस्थितियों से लड़ने का हौसला दिखाया और एक नई राह चुनी, बजाय इसके कि वह गाँव में दुख सहती रहे।

» लेखिका के घर में भक्तिन का प्रवेश और उसकी पाक-कला

प्रश्न 37 (आसान). भक्तिन जब लेखिका के घर काम करने आई, तो उसकी वेश-भूषा कैसी थी?
उत्तर – उसकी घुटी हुई चाँद मोटी मैली धोती से ढकी थी और कान कपड़े से बाहर निकले थे, जैसे वह सब प्रकार की आहट सुन रही हो।

प्रश्न 38 (आसान). भक्तिन के अनुसार, खाना बनाना कौन सी बड़ी बात थी?
उत्तर – उसके अनुसार, रोटी बनाना, दाल बनाना, साग-सब्जी छौंकना ही खाना बनाना है, और इसमें कोई बड़ी बात नहीं।

प्रश्न 39 (मध्यम). रसोई में भक्तिन ने कोयले की मोटी रेखा क्यों खींची और लेखिका पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – भक्तिन ने कोयले की मोटी रेखा खींचकर अपनी रसोई की सीमा निश्चित की, जो उसकी पवित्रता और अपने नियमों को मानने का प्रतीक था। लेखिका को यह 'टेढ़ी खीर' लगा और उन्हें लगा कि इस सेवक के साथ रहना आसान नहीं होगा, क्योंकि भक्तिन के नियम लक्ष्मण रेखा के समान अटूट थे।

प्रश्न 40 (कठिन). पहले दिन के भोजन के बाद भक्तिन ने लेखिका को कैसे समझाया और इससे लेखिका के मन में क्या विचार आया?
उत्तर – भक्तिन ने रोटियों के ज़्यादा 'खरी' होने का बचाव किया कि वे अच्छी सिक गई हैं, और दाल के महत्व पर ज़ोर दिया कि शाम को तरकारी बना दी जाएगी। उसने घी और गुड़ के विकल्प भी सुझाए और कटाक्ष किया कि 'शहर के लोग क्या कलाबत्तू खाते हैं?' भक्तिन के इस 'सारगर्भित लेक्चर' का प्रभाव यह हुआ कि लेखिका को अपनी सुविधाएँ छिपाने लगी और उन्हें न्याय-सूत्र पढ़ते-पढ़ते शहर और देहात के जीवन के अंतर पर विचार करने लगी।

» भक्तिन का स्वभाव: परिवर्तन न स्वीकारना

प्रश्न 41 (आसान). भक्तिन खुद में बदलाव क्यों नहीं चाहती थी?
उत्तर – यह उसका स्वभाव था कि वह दूसरों को अपने अनुसार ढालना चाहती थी, पर स्वयं में कोई परिवर्तन स्वीकार नहीं करती थी।

प्रश्न 42 (आसान). भक्तिन ने लेखिका को कौन-से देहाती व्यंजन सिखाए?
उत्तर – मकई का दलिया, बाजरे के पुए, ज्वार के भुने भुट्टों की खिचड़ी।

प्रश्न 43 (मध्यम). भक्तिन के स्वभाव के कारण लेखिका के जीवन में क्या बदलाव आया?
उत्तर – लेखिका का जीवन अधिक देहाती हो गया, उन्हें ग्रामीण खान-पान और लोककथाओं की जानकारी हो गई।

प्रश्न 44 (कठिन). भक्तिन का 'परिवर्तन न स्वीकारने' का स्वभाव उसके व्यक्तित्व के किस पहलू को उजागर करता है?
उत्तर – यह उसके दृढ़ निश्चयी, स्वाभिमानी और अपनी ग्रामीण पहचान पर अडिग रहने वाले व्यक्तित्व को उजागर करता है। वह अपने मूल्यों से समझौता नहीं करती थी।

» भक्तिन के 'दुर्गुण' और उसका 'शास्त्रार्थ'

प्रश्न 45 (आसान). भक्तिन किन दो 'दुर्गुणों' के लिए जानी जाती थी?
उत्तर – पैसे छिपाना और झूठ बोलना।

प्रश्न 46 (आसान). भक्तिन के अनुसार, पैसे छिपाना 'चोरी' क्यों नहीं था?
उत्तर – उसके अनुसार वह तो लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसों को 'संभालकर' रख रही थी।

प्रश्न 47 (मध्यम). भक्तिन अपने झूठ को कैसे सही ठहराती थी?
उत्तर – वह कहती थी कि उसका परम कर्तव्य लेखिका को प्रसन्न रखना है, और जिस बात से उन्हें क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर बताना झूठ नहीं है।

प्रश्न 48 (कठिन). लेखिका ने भक्तिन के 'शास्त्रार्थ' के सामने हार क्यों मान ली?
उत्तर – क्योंकि भक्तिन ऐसे तर्क देती थी, जो इतने अटपटे और निजी होते थे कि उनका जवाब देना किसी भी तर्क-शिरोमणि के लिए असंभव था, जैसे 'तीरथ गए मुंडाए सिध' का कोई वास्तविक शास्त्रार्थ नहीं था।

» भक्तिन का स्वाभिमान और लेखिका के प्रति वफादारी

प्रश्न 49 (आसान). युद्ध के समय जब भक्तिन के घरवाले उसे बुलाने आए, तो भक्तिन ने क्या किया?
उत्तर – भक्तिन ने जाने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह लेखिका का साथ नहीं छोड़ना चाहती थी।

प्रश्न 50 (आसान). भक्तिन किस बात पर लेखिका की पढ़ाई-लिखाई पर अभिमान करती थी?
उत्तर – भक्तिन को गर्व था कि उसकी मालकिन दिन-रात किताबों में लगी रहती हैं, और वो अपनी अनपढ़ता को लेखिका की पढ़ाई पर अभिमान करके छुपा लेती थी।

प्रश्न 51 (मध्यम). भक्तिन लेखिका के साहित्यिक कामों में किस तरह 'सहायता' करती थी, भले ही वह सीधे तौर पर मदद न कर पाए?
उत्तर – वह कभी उत्तर-पुस्तकों को बाँधकर, कभी रंगों की प्याली धोकर, कभी चटाई झाड़कर दिखावा करती थी कि वह भी मदद कर रही है। वह रात में लेखिका के जागते रहने पर दही का शर्बत या तुलसी की चाय लाकर देती थी ताकि लेखिका को भूख न लगे। इससे उसका लेखिका के काम के प्रति जुड़ाव और वफ़ादारी दिखती थी।

प्रश्न 52 (कठिन). युद्ध के दौरान जब लोग भयभीत थे और पलायन कर रहे थे, तब भक्तिन ने अपने किस अप्रत्याशित गुण का परिचय दिया?
उत्तर – युद्ध के समय, जब सब लोग डरकर गाँव लौट रहे थे, तब भक्तिन ने पहली बार लेखिका से गाँव चलने का अनुरोध किया। उसने अपने गड़े हुए पाँच बीसी और पाँच रुपये देने की बात कही ताकि वह लेखिका के लिए गाँव में घर-गृहस्थी का पूरा इंतजाम कर सके। यह उसकी अगाध वफ़ादारी, साहस और लेखिका के प्रति त्याग का अप्रत्याशित परिचय था।

» युद्धकाल में भक्तिन की उदारता और लेखिका के प्रति निष्ठा

प्रश्न 53 (आसान). युद्ध के समय भक्तिन ने लेखिका को क्या सुझाव दिया?
उत्तर – उसने लेखिका को अपने साथ गाँव चलने का सुझाव दिया।

प्रश्न 54 (आसान). भक्तिन ने गाँव में लेखिका के रहने की क्या व्यवस्था बताई?
उत्तर – उसने बताया कि वह मचान पर कपड़े रख देगी, दीवारों पर कीलें गाड़कर किताबें सजा देगी और पुआल का गोंदरा बिछाकर सोने का प्रबंध करेगी।

प्रश्न 55 (मध्यम). लेखिका के प्रति भक्तिन की यह उदारता और निष्ठा क्यों असाधारण मानी जाती है?
उत्तर – यह असाधारण इसलिए है क्योंकि भक्तिन स्वभाव से बहुत कंजूस थी और ऐसे मुश्किल समय में अपनी सारी जमा-पूँजी देने की पेशकश करना उसके गहरे प्रेम और निस्वार्थ भाव को दर्शाता है।

प्रश्न 56 (कठिन). भक्तिन की 'कंजूसी के प्राण पूँजीभूत होते-होते पर्वताकार बन चुके थे; परंतु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षण भर में उन्हें उड़ा दिया।' - इस कथन का आशय स्पष्ट करें।
उत्तर – इस कथन का आशय यह है कि भक्तिन स्वभाव से बहुत मितव्ययी थी और उसने अपनी कमाई पाई-पाई जोड़कर एक बड़ी पूँजी बना ली थी, जो उसके लिए पहाड़ के समान महत्वपूर्ण थी। परंतु लेखिका के प्रति उसके अगाध प्रेम और निष्ठा ने उसकी सारी कंजूसी को क्षण भर में खत्म कर दिया। वह अपनी पूरी जमा-पूँजी लेखिका पर न्योछावर करने को तैयार हो गई, जो उसकी महान उदारता का प्रतीक है।

» सेवक-स्वामी संबंध की अनोखी परिभाषा

प्रश्न 57 (आसान). लेखिका भक्तिन को 'नौकर' कहना क्यों पसंद नहीं करती थीं?
उत्तर – क्योंकि भक्तिन का रिश्ता पारंपरिक सेवक-स्वामी जैसा नहीं था, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा गहरा और स्वतंत्र था।

प्रश्न 58 (आसान). भक्तिन की कौन सी बात उसे 'आज्ञाकारी सेवक' की श्रेणी से बाहर करती थी?
उत्तर – भक्तिन लेखिका के 'चले जाने' के आदेश पर भी हँसकर अवज्ञा करती थी, यानी उनकी बात नहीं मानती थी।

प्रश्न 59 (मध्यम). लेखिका ने अपने आप को 'कैसा स्वामी' बताया है जिसके कारण यह संबंध अनोखा बन गया?
उत्तर – लेखिका ने कहा कि वह ऐसी स्वामी नहीं थीं जो भक्तिन को अपनी सेवा से हटा सकें, भले ही उनकी इच्छा हो।

प्रश्न 60 (कठिन). भक्तिन के 'स्वतंत्र व्यक्तित्व' से क्या आशय है और यह उसके संबंध को कैसे प्रभावित करता था?
उत्तर – भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व का अर्थ है कि वह अपने मन की मालिक थी, अपने नियमों और विचारों के अनुसार चलती थी। वह लेखिका के हर आदेश को आँख मूँदकर नहीं मानती थी, बल्कि अपनी राय रखती थी और कई बार तो उनकी आज्ञा को टाल भी देती थी। इसी स्वतंत्रता के कारण उनका संबंध पारंपरिक नौकर-मालकिन जैसा नहीं रह गया था, बल्कि वह लेखिका के जीवन का एक अटूट और अपरिहार्य हिस्सा बन गई थी।

» भक्तिन की सामाजिक संवेदनशीलता

प्रश्न 61 (आसान). भक्तिन को किससे डर लगता था?
उत्तर – भक्तिन को कारागार (जेल) से डर लगता था।

प्रश्न 62 (आसान). जेल जाने की संभावना पर भक्तिन क्या करने को तैयार थी?
उत्तर – वह लेखिका के साथ जेल जाने को तैयार थी और उनके लिए सामान भी बाँधना चाहती थी।

प्रश्न 63 (मध्यम). भक्तिन के लिए 'मालिक को ले जाकर बंद कर देने में इतना अन्याय नहीं, पर नौकर को अकेले मुक्त छोड़ देने में पहाड़ के बराबर अन्याय है' - इस कथन का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि भक्तिन के लिए अपनी मालकिन का साथ देना सबसे महत्वपूर्ण था। उसे लगता था कि मालिक को जेल हो जाए तो भी चलेगा, पर अगर उसे (नौकर को) मालकिन के बिना अकेला छोड़ दिया गया, तो यह बहुत बड़ा अन्याय होगा क्योंकि वह मालकिन का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहती थी।

प्रश्न 64 (कठिन). भक्तिन की कारागार के प्रति संवेदनशीलता उसके किस मानवीय पक्ष को उजागर करती है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – भक्तिन की कारागार के प्रति संवेदनशीलता उसके मानवीय पक्ष को उजागर करती है जिसमें गहरा प्रेम, अटूट निष्ठा और अन्याय के प्रति लड़ने का भाव शामिल है। यद्यपि वह जेल से बहुत डरती थी, पर लेखिका के प्रति उसकी निष्ठा इतनी प्रबल थी कि वह उनके साथ हर परिस्थिति में रहने को तैयार थी। उसका यह विचार कि नौकर को अकेला छोड़ना 'पहाड़ के बराबर अन्याय' है, उसकी मजबूत सामाजिक चेतना और अन्याय के खिलाफ खड़े होने की भावना को दर्शाता है। यह

सिर्फ एक सेवक का डर नहीं था, बल्कि एक संवेदनशील इंसान का अपनी प्रियजन के लिए दर्द और त्याग था।

» भक्तिन की कहानी: एक अधूरी आत्मीयता

प्रश्न 65 (आसान). लेखिका ने भक्तिन की कहानी को 'अधूरी' क्यों कहा?

उत्तर – क्योंकि भक्तिन अभी लेखिका के जीवन में जीवित और उपस्थित है, और उसका साथ चल रहा है।

प्रश्न 66 (आसान). लेखिका भक्तिन की कहानी को क्यों 'पूरी' नहीं करना चाहतीं?

उत्तर – क्योंकि कहानी पूरी होने का मतलब भक्तिन को खोना होगा, और लेखिका भक्तिन के गहरे प्रेम और साथ को खोना नहीं चाहतीं।

प्रश्न 67 (मध्यम). लेखिका के इस कथन से उनके और भक्तिन के रिश्ते के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर – इससे पता चलता है कि उनका रिश्ता सिर्फ मालिक-सेवक का नहीं था, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा गहरा, आत्मीय और भावनात्मक था, जहाँ वे एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

प्रश्न 68 (कठिन). अगर लेखिका भक्तिन की कहानी को पूरा करतीं, तो उसका क्या मतलब होता?

उत्तर – अगर लेखिका भक्तिन की कहानी को पूरा करतीं, तो इसका मतलब होता कि भक्तिन उनके जीवन से चली जाती (यानी उसकी मृत्यु हो जाती), और लेखिका इसे कभी नहीं चाहती थीं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. महादेवी वर्मा जी की किन्हीं दो काव्य रचनाओं और दो गद्य रचनाओं के नाम बताइए। साथ ही, उन्हें 'छायावाद के चार स्तंभों में से एक' क्यों कहा जाता है?

› पहले काव्य रचनाएँ याद करते हैं: उनकी कविताओं में 'दीपशिखा' और 'यामा' बहुत प्रमुख हैं। 'यामा' के लिए तो उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला था।

› अब गद्य रचनाएँ: 'शृंखला की कड़ियाँ' और 'स्मृति की रेखाएँ' उनके निबंध और संस्मरण के अच्छे उदाहरण हैं।

› अब 'छायावाद के चार स्तंभ' की बात: छायावाद हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण दौर था, जिसमें प्रकृति, प्रेम और रहस्यात्मकता पर ज़ोर दिया गया। इस दौर के चार सबसे बड़े कवि थे पंत, प्रसाद, निराला और हमारी महादेवी वर्मा जी। इसलिए उन्हें एक स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि उनका योगदान इस विधा में बहुत बड़ा था।

उत्तर – महादेवी वर्मा जी की दो काव्य रचनाएँ 'दीपशिखा' और 'यामा' हैं। उनकी दो गद्य रचनाएँ 'शृंखला की कड़ियाँ' और 'स्मृति की रेखाएँ' हैं। उन्हें छायावाद के चार स्तंभों में से एक इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री थीं, और पंत, प्रसाद, निराला के साथ उन्होंने इस युग को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया।

उदाहरण 2. महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'भक्तिन' रेखाचित्र का केंद्रीय भाव और मुख्य उद्देश्य क्या है?

› पहले हमें समझना होगा कि भक्तिन का जीवन कैसा था – उसके बचपन से लेकर महादेवी जी के साथ रहने तक का संघर्ष।

› फिर, हमें देखना है कि समाज ने उसे कैसे-कैसे चुनौतियों में डाला – जैसे संपत्ति के लिए रिश्तेदारों का लालच, बेटियों का अकेलापन।

› अब, इन संघर्षों के बावजूद भक्तिन ने हार नहीं मानी, वह डटी रही। यही उसका स्वाभिमानी और जुझारू व्यक्तित्व है।

› अंत में, महादेवी जी के साथ उसका रिश्ता केवल मालकिन-नौकरानी का नहीं, बल्कि एक गहरी आत्मीयता का था। यह भी केंद्रीय भाव का हिस्सा है।

› तो उद्देश्य हुआ स्त्री के संघर्ष, स्वाभिमान, और सामाजिक कुरीतियों के प्रति आवाज़ उठाना।

उत्तर – 'भक्तिन' रेखाचित्र का केंद्रीय भाव एक संघर्षशील, स्वाभिमानी ग्रामीण स्त्री के जुझारू व्यक्तित्व का चित्रण है, जो पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों और शोषण का विरोध करती है। इसका मुख्य उद्देश्य स्त्री-अस्मिता के संघर्ष को दर्शाना, सामाजिक सरोकारों को उभारना, और मानवीय संबंधों की गहराई को व्यक्त करना है।

उदाहरण 3. महादेवी वर्मा ने 'लछमिन' को 'भक्तिन' नाम क्यों दिया और भक्तिन इस नाम को पाकर इतनी प्रसन्न क्यों हुई?

› सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि 'लछमिन' का शाब्दिक अर्थ क्या है – 'लक्ष्मी' यानी धन और समृद्धि की देवी।

› फिर यह देखें कि लछमिन के वास्तविक जीवन में क्या था – गरीबी, संघर्ष और दुखों से भरा जीवन।

› इस विरोधाभास के कारण लछमिन को अपना नाम पसंद नहीं था और उसने महादेवी वर्मा से इसे न पुकारने का अनुरोध किया।

› महादेवी वर्मा ने लछमिन के गले में 'कंठी माला' देखी, जो भक्ति का प्रतीक होती है।

› इस कंठी माला के आधार पर उन्होंने 'लछमिन' को 'भक्तिन' नाम दिया।

› भक्तिन को यह नाम इसलिए पसंद आया क्योंकि यह उसके वास्तविक जीवन से जुड़ा था (भक्ति भाव), और उसे एक नई, सार्थक पहचान मिली जो उसके अतीत के दुखद विरोधाभास से मुक्त थी।

उत्तर – महादेवी वर्मा ने लछमिन के गले में कंठी माला देखकर उसे 'भक्तिन' नाम दिया। भक्तिन इस नाम को पाकर प्रसन्न हुई क्योंकि यह नाम उसके जीवन के भक्ति भाव को दर्शाता था और उसे अपने पुराने नाम के विरोधाभास और उससे जुड़ी पीड़ा से मुक्ति मिली।

उदाहरण 4. भक्तिन के जीवन में विमाता और सास के व्यवहार ने क्या भूमिका निभाई?

› पहले, विमाता के व्यवहार को समझें: भक्तिन अपने पिता की इकलौती बेटी थी, पिता उसे बहुत प्यार करते थे। इस वजह से उसकी सौतेली माँ उससे जलती थी।

› विमाता ने बचपन में ही उसका गौना करवा दिया, ताकि वह पराया धन समझकर उससे छुटकारा पा सके।

› पिता की मृत्यु का समाचार विमाता ने भक्तिन को तब भेजा, जब सब कुछ खत्म हो चुका था। सास ने भी उसे यह खबर छिपाकर ससुराल भेजा।

› सास का व्यवहार: सास ने भी अपने बेटों को खुश करने के लिए भक्तिन से घर का सारा काम करवाया और उसे ठीक से खाना तक नहीं दिया।

› निष्कर्ष: इन दोनों के व्यवहार ने भक्तिन के बचपन को दुखों से भर दिया और उसे बहुत मजबूत बना दिया, लेकिन उसके मन में कटुता भी भर दी।

उत्तर – विमाता की ईर्ष्या और धोखेबाजी तथा सास की उपेक्षा और शोषण ने भक्तिन के बचपन को बहुत कष्टमय बना दिया, जिससे वह कम उम्र में ही जीवन के कटु अनुभवों से रूबरू हुई।

उदाहरण 5. भक्तिन को घर के कामों में कैसे भेदभाव का सामना करना पड़ा और उसके पति का व्यवहार कैसा था?

› पाठ में बताया गया है कि भक्तिन घर के सारे मुश्किल काम करती थी: 'मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती'।

› उसकी नन्ही बेटियां भी गोबर उठातीं और कंडे पाथती थीं।

› वहीं, उसकी जिठानियां बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके बेटे धूल उड़ाते।

› खाने में भी भेदभाव था: जिठानियों को सफेद राब और गाढ़ा दूध मिलता था, जबकि भक्तिन को काले गुड़ की डली के साथ कठौती में मट्ठा और उसकी बेटियों को चने-बाजरे की घुघरी मिलती थी।

› इसके बावजूद, उसका पति उसे बहुत प्यार करता था और उसने कभी भक्तिन पर हाथ नहीं उठाया।

› पति के इसी प्रेम के बल पर भक्तिन ने ससुराल वालों से अलग होकर अपना घर बसा लिया था।

उत्तर – भक्तिन को घर के सबसे कठिन काम करने पड़ते थे और खाने में भी भेदभाव झेलना पड़ता था। उसकी बेटियां भी घर के काम करती थीं। लेकिन उसके पति ने हमेशा उसे सहारा दिया और उस पर कभी हाथ नहीं उठाया, जिसके बल पर भक्तिन ने बाद में ससुराल वालों से अलग होकर अपना घर बसा लिया।

उदाहरण 6. भक्तिन ने अपने पति के प्रेम और सहयोग से किन चुनौतियों का सामना किया और 'अलगौझा' का निर्णय क्यों लिया?

› भक्तिन को ससुराल में उसकी जिठानियाँ और सास बहुत परेशान करती थीं, उसे ताने मारती थीं और काम ज़्यादा करवाती थीं।

› भक्तिन का पति उसे बहुत प्यार करता था और हमेशा उसका पक्ष लेता था, जिससे भक्तिन को हिम्मत मिलती थी।

› पति के इसी प्रेम के बल पर भक्तिन ने फैसला किया कि वह अपने देवरों और जिठानियों से अलग होकर अपनी संपत्ति का बँटवारा (अलगौझा) करेगी।

› अलगौझा करने के बाद, भक्तिन ने अपनी मेहनत और समझदारी से अपनी गाय-भैंस, खेत और पेड़ों की देखभाल की

और अपनी संपत्ति को बढ़ाया।

उत्तर – पति के प्रेम और सहयोग से भक्तिन ने ससुराल की जिठानियों के भेदभाव और अन्याय का सामना किया। पति के सहारे से ही उसने अलग होकर अपनी मेहनत से अपनी संपत्ति को बढ़ाया और आत्मनिर्भर बनी।

उदाहरण 7. भक्तिन ने पति की मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति और परिवार को बचाने के लिए कौन-कौन से मुख्य कदम उठाए?

› पहला कदम: उसने जेठ-जिठौतों द्वारा दोबारा शादी करने के दबाव को पूरी तरह ठुकरा दिया और साफ कह दिया कि वह दोबारा शादी नहीं करेगी.

› दूसरा कदम: अपनी सभी छोटी लड़कियों का समय पर विवाह किया ताकि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके.

› तीसरा कदम: अपनी सबसे बड़ी बेटी का विवाह करने के बाद, उसके पति को 'घर जमाई' बनाकर अपने पास ही रखा, ताकि घर की देखरेख और संपत्ति की सुरक्षा बनी रहे.

› चौथा कदम: उसने अपनी जमीन के एक इंच हिस्से के लिए भी समझौता नहीं किया और अपनी संपत्ति की पूरी तरह से रक्षा की.

उत्तर – भक्तिन ने पुनर्विवाह से इनकार किया, बेटियों का विवाह कराया, बड़े दामाद को घरजमाई बनाया और अपनी संपत्ति के लिए मजबूती से संघर्ष किया.

उदाहरण 8. भक्तिन की बड़ी बेटी के साथ पंचायत का फैसला क्यों अन्यायपूर्ण था और इसका उसके जीवन पर क्या असर पड़ा?

› पहला, बेटी विधवा होने के बाद उसके जिठौतों ने संपत्ति हड़पने के लिए षड्यंत्र रचा। उन्होंने एक अयोग्य लड़के (तीतर लड़ाने वाला) को उससे जबरन ब्याहने की कोशिश की।

› दूसरा, जब लड़के ने बेटी की गैरमौजूदगी में उसकी कोठरी में घुसकर दरवाज़ा बंद कर लिया, तो बेटी ने खुद का बचाव किया। लेकिन, पंचायत ने सच्चाई जाने बिना यह फैसला सुना दिया कि चूंकि वे दोनों एक ही कोठरी से निकले हैं, इसलिए उन्हें पति-पत्नी बनकर ही रहना होगा।

› तीसरा, यह फैसला पूरी तरह से लड़की की इच्छा और सम्मान के खिलाफ था। उसे एक अनचाहा और निकम्मा पति थोप दिया गया।

› चौथा, इस फैसले के कारण भक्तिन के परिवार को ज़मीन-जायदाद, गाय-ढोर सब गंवाने पड़े क्योंकि दामाद काम नहीं करता था और खेती-बारी का काम बिगड़ गया।

› आखिर में, इस अन्याय के कारण भक्तिन को अपना गाँव छोड़कर शहर आना पड़ा, जहाँ वह लेखिका के घर नौकरानी बनी।

उत्तर – पंचायत का फैसला पूरी तरह से अन्यायपूर्ण था क्योंकि उसने बिना सच्चाई जाने, केवल एक 'दिखावे' के आधार पर बेटी को एक अनचाहा और अयोग्य पति स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया। इस फैसले ने भक्तिन और उसकी बेटी के जीवन को पूरी तरह से तबाह कर दिया, उनकी संपत्ति छीन ली और उन्हें दर-दर भटकने पर मजबूर कर दिया।

उदाहरण 9. भक्तिन ने गाँव से शहर आने का निर्णय क्यों लिया?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि भक्तिन के साथ गाँव में क्या-क्या हुआ था। उसकी बड़ी बेटी के साथ अन्याय हुआ, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी।

› फिर, उसे लगान न दे पाने के कारण जमींदार से बहुत अपमान सहना पड़ा। उसे दिन भर धूप में खड़ा रखा गया था।

› भक्तिन एक स्वाभिमानी और मेहनती महिला थी। इस अपमान ने उसे बहुत ठेस पहुँचाई।

› अपनी बिगड़ती आर्थिक स्थिति और आत्मसम्मान को ठेस पहुँचने के कारण उसने गाँव छोड़कर शहर जाने का निर्णय लिया, ताकि वह काम कर सके और सम्मान से जी सके।

उत्तर – भक्तिन ने गाँव से शहर आने का निर्णय आर्थिक तंगी और जमींदार द्वारा किए गए अपमान के कारण लिया, क्योंकि वह अपनी मेहनत और स्वाभिमान के साथ जीना चाहती थी।

उदाहरण 10. लेखिका के घर भक्तिन के पहले दिन के भोजन का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

› पहले भक्तिन के रसोई में प्रवेश और उसके नियमों (जैसे कोयले की मोटी रेखा खींचना) का ज़िक्र करें।

› भोजन परोसने के तरीके को बताएं - प्रसन्नता और आत्मसंतुष्टि।

› भोजन का विवरण दें - मोटी, काली चित्तीदार रोटियाँ और गाढ़ी दाल।

› लेखिका की प्रतिक्रिया और भक्तिन के 'स्पष्टीकरण' को लिखें।

› बताएं कि भक्तिन ने कैसे अपनी पाक-कला को सही ठहराया, जैसे 'शहर के लोग क्या कलाबत्तू खाते हैं?'।

› अंतिम परिणाम - लेखिका ने बिना गुड़ और घी के रूखी रोटी खाई।

› यह भी जोड़ें कि इस घटना से लेखिका को देहाती और शहरी जीवन के अंतर का अनुभव हुआ।

उत्तर – भक्तिन ने लेखिका के घर में पहले दिन अपनी पाक-कला का परिचय देते हुए, रसोई में प्रवेश से पहले सिर पर कई लोटे जल औंधाकर स्नान किया और फिर कोयले से एक मोटी रेखा खींचकर अपनी रसोई की सीमा निर्धारित की। भोजन के समय उसने प्रसन्नता और आत्मसंतुष्टि के साथ लेखिका की थाली में एक अंगुल मोटी और गहरी काली चित्तीदार चार रोटियाँ और गाढ़ी दाल परोस दी। लेखिका के 'यह क्या बनाया है?' पूछने पर भक्तिन ने बताया कि रोटियाँ अच्छी सेंकने के प्रयास में थोड़ी अधिक खरी हो गई हैं, और तरकारी की जगह दाल क्यों बनाई। उसने यह भी कहा कि अगर दूध-घी अच्छा नहीं लगता तो अमचूर या गुड़ खा सकते हैं, क्योंकि 'शहर के लोग क्या कलाबत्तू खाते हैं?' भक्तिन के इस तर्कों से भरी बात के बाद, लेखिका को बिना गुड़ और घी के रूखी दाल से एक मोटी रोटी खानी पड़ी, जिससे उन्हें शहर और देहात के जीवन का अंतर समझ में आया।

उदाहरण 11. पाठ के आधार पर बताइए कि भक्तिन ने लेखिका को कैसे प्रभावित किया और खुद क्यों नहीं बदली?

› पहला कदम: भक्तिन ने लेखिका को अपने देहाती भोजन जैसे मकई का दलिया, बाजरे के पुए, ज्वार की खिचड़ी खाने सिखाए।

› दूसरा कदम: लेखिका को अपनी ग्रामीण भाषा की दंतकथाएँ कंठस्थ करवा दीं।

› तीसरा कदम: भक्तिन ने स्वयं शहर के तौर-तरीके, जैसे 'जी' कहना या साफ धोती पहनना, नहीं अपनाए, क्योंकि उसका स्वभाव ही था कि वह दूसरों को ढालती थी, खुद नहीं बदलती थी।

उत्तर – भक्तिन ने लेखिका को अपने ग्रामीण खान-पान और लोककथाओं से प्रभावित किया, जिससे लेखिका का जीवन अधिक देहाती हो गया। पर भक्तिन ने कभी भी शहर की कोई आदत या वेशभूषा नहीं अपनाई क्योंकि उसका स्वभाव ही दूसरों को अपने अनुसार ढालने का था, स्वयं में परिवर्तन स्वीकार करने का नहीं।

उदाहरण 12. भक्तिन ने लेखिका के 'बाल न मुंडवाने' की बात को किस 'शास्त्रार्थ' से काटा था?

› लेखिका ने भक्तिन को सिर मुंडवाने से रोका क्योंकि उन्हें स्त्रियों का सिर मुंडवाना पसंद नहीं था।

› भक्तिन ने तुरंत जवाब दिया कि 'शास्त्र' में लिखा है।

› जब लेखिका ने पूछा 'क्या लिखा है?', तो भक्तिन ने जवाब दिया, 'तीरथ गए मुंडाए सिध'।

› इस अटपटे तर्क के आगे लेखिका कुछ नहीं कह पाईं और भक्तिन हर गुरुवार अपना सिर मुंडवाती रहीं।

उत्तर – भक्तिन ने 'तीरथ गए मुंडाए सिध' का तर्क देकर लेखिका की बात को काट दिया था।

उदाहरण 13. लेखिका ने भक्तिन को पढ़ने के लिए कहा, तो भक्तिन ने क्या तर्क दिया और क्यों?

› जब लेखिका ने अपने सभी काम करने वालों से अंगूठे के निशान की जगह हस्ताक्षर लेने का नियम बनाया, तो भक्तिन मुश्किल में पड़ गई।

› भक्तिन पढ़ना नहीं चाहती थी और उसे अपनी बढ़ती उम्र में दूसरे नौकरों के साथ बैठकर पढ़ना अपनी बेइज़्ज़ती लगी।

› उसने तर्क दिया, 'हमारे मलकिन तौ रात-दिन कितबियन माँ गड़ी रहती हैं। अब हमहूँ पढ़ै लागब तो घर-गिरिस्ती कउन देखी-सुनी।'

› इस तर्क से उसने खुद को पढ़ने से बचा लिया और अपनी आत्म-सम्मान की रक्षा की, साथ ही लेखिका की पढ़ाई को भी बहुत महत्व दिया।

उत्तर – भक्तिन ने पढ़ने से मना कर दिया क्योंकि उसे अपनी उम्र में दूसरों के साथ बैठकर पढ़ना अपमानजनक लगा। उसने कहा कि जब मालकिन खुद इतना पढ़ती हैं, तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा अगर वह भी पढ़ने लगे। इस तरह उसने अपने स्वाभिमान की रक्षा की।

उदाहरण 14. भक्तिन ने लेखिका को युद्धकाल में गाँव ले जाने का प्रस्ताव क्यों दिया और इस प्रस्ताव में उसने अपनी किस विशेषता का परिचय दिया?

› पहला कदम है यह समझना कि युद्धकाल में पलायन-वृत्ति बढ़ जाती है, यानी सब सुरक्षित जगह जाना चाहते हैं।

› भक्तिन ने देखा कि लेखिका भी इस मुश्किल में हैं और शहर सुरक्षित नहीं है, इसलिए उसने गाँव चलने को कहा।

› उसने केवल रहने का इंतजाम नहीं बताया, बल्कि अपनी जमा-पूँजी 'पाँच बीसी और पाँच रुपया' देने की बात कही।

› यह उसकी 'गहरी निष्ठा' और 'निस्वार्थ उदारता' का सबसे बड़ा प्रमाण था, क्योंकि वह अपनी इतनी मेहनत की कमाई लेखिका के लिए कुर्बान करने को तैयार थी।

उत्तर – भक्तिन ने लेखिका को युद्धकाल में गाँव ले जाने का प्रस्ताव इसलिए दिया क्योंकि वह लेखिका की सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहती थी। इस प्रस्ताव में उसने अपनी गहरी निष्ठा, निस्वार्थ प्रेम और असाधारण उदारता का परिचय दिया, जब उसने अपनी सारी जमा-पूँजी लेखिका के लिए समर्पित कर दी।

उदाहरण 15. लेखिका ने भक्तिन के व्यक्तित्व की तुलना घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अंधेरे-उजाले से क्यों की है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि अंधेरे-उजाले या गुलाब के फूल जैसी चीजें क्या हैं। ये हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता, और न ही हम उन्हें हटा सकते हैं। वे अपने आप आते-जाते हैं और हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

› दूसरा कदम: अब भक्तिन के व्यक्तित्व को इन चीज़ों से जोड़िए। लेखिका यह समझाना चाहती हैं कि भक्तिन भी उनके जीवन का एक ऐसा ही ज़रूरी और अटल हिस्सा बन गई थी।

› तीसरा कदम: भक्तिन का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व था, जिसे लेखिका चाहकर भी अपने जीवन से अलग नहीं कर सकती थीं, ठीक वैसे ही जैसे वे अंधेरे-उजाले को अलग नहीं कर सकतीं। भक्तिन का आना-जाना, उसका स्वभाव, सब उसके अपने तरीके से चलता था, न कि लेखिका के आदेश पर।

› चौथा कदम: यह तुलना इस बात पर जोर देती है कि भक्तिन सिर्फ़ एक नौकरानी नहीं थी, बल्कि लेखिका के जीवन का एक स्वाभाविक, अनिवार्य और स्वतंत्र हिस्सा थी, जिसकी अपनी पहचान थी।

उत्तर – लेखिका ने भक्तिन के व्यक्तित्व की तुलना अंधेरे-उजाले या गुलाब के फूल से इसलिए की है क्योंकि ये सभी हमारे जीवन के वे अभिन्न, स्वाभाविक और स्वतंत्र हिस्से हैं जिन्हें हम चाहकर भी अपने जीवन से अलग नहीं कर सकते। भक्तिन भी लेखिका के जीवन में इसी तरह बस गई थी, उसका अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व था जिसे लेखिका नियंत्रित नहीं कर सकती थीं और न ही उससे मुक्ति पा सकती थीं।

उदाहरण 16. भक्तिन जेल जाने की संभावना पर कैसा व्यवहार करती थी और क्यों?

› पहला कदम: भक्तिन को कारागार (जेल) से यमलोक की तरह भय लगता था।

› दूसरा कदम: वह ऊँची दीवारें देखकर बेहोश हो जाना चाहती थी।

› तीसरा कदम: पर इस डर के बावजूद, वह लेखिका का साथ छोड़ने को तैयार नहीं थी, चाहे जेल ही क्यों न जाना पड़े।

› चौथा कदम: वह सोचती थी कि मालिक को बंद करना अन्याय नहीं, पर नौकर को अकेला छोड़ना 'पहाड़ के बराबर अन्याय' है।

› पांचवां कदम: वह अपनी धोती साफ़ करने और सामान बाँधने की बात करती थी, ताकि लेखिका को वहाँ कोई असुविधा न हो।

उत्तर – भक्तिन जेल से बहुत डरती थी और ऊँची दीवारें देखकर बेहोश होना चाहती थी, लेकिन लेखिका के प्रति उसकी अटूट निष्ठा और सामाजिक संवेदनशीलता के कारण वह उनके साथ जेल जाने को तैयार थी, ताकि उन्हें कोई असुविधा न हो और उसे मालिक को अकेला छोड़ने का अन्याय न सहना पड़े।

उदाहरण 17. लेखिका 'भक्तिन की कहानी अधूरी है, पर उसे खोकर मैं इसे पूरी नहीं करना चाहती' ऐसा क्यों कहती हैं? समझाइए।

› पहले यह समझना होगा कि 'भक्तिन की कहानी अधूरी है' से लेखिका का क्या तात्पर्य है। इसका अर्थ है कि भक्तिन अभी लेखिका के जीवन में है, और उसका साथ चल रहा है।

› दूसरा बिंदु है 'उसे खोकर मैं इसे पूरी नहीं करना चाहती'। इसका मतलब है कि अगर भक्तिन चली जाएगी (यानी उसकी मृत्यु हो जाएगी), तो ही उसकी जीवन-कहानी 'पूरी' मानी जाएगी।

› लेखिका भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं, क्योंकि उनके बीच एक गहरा, आत्मीय रिश्ता है, जो मालिक-सेवक के रिश्ते

से कहीं बढ़कर है।

› इसलिए, वह भक्तिन के साथ को इतना महत्व देती हैं कि उसकी कहानी को अधूरा ही रखना पसंद करती हैं, ताकि भक्तिन हमेशा उनके जीवन में रहे।

उत्तर – लेखिका यह कहकर भक्तिन के प्रति अपने गहरे प्रेम और आत्मीय संबंध को व्यक्त करती हैं। वह भक्तिन के साथ को इतना महत्व देती हैं कि उसे खोने की बजाय उसकी कहानी को हमेशा 'अधूरा' रखना पसंद करती हैं, ताकि वह हमेशा उनके जीवन का हिस्सा बनी रहे।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता है कि 'भक्तिन' रेखाचित्र का मूल संदेश या उद्देश्य क्या है। इसके केंद्रीय भाव और महादेवी जी के साथ भक्तिन के रिश्ते को ज़रूर विस्तार से समझना और लिखना।

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि 'भक्तिन' को यह नाम किसने और क्यों दिया। आपको उसके असली नाम 'लछमिन' और महादेवी वर्मा द्वारा दिए गए 'भक्तिन' नाम के पीछे के कारण को स्पष्ट करना होगा।

• यह अंश भक्तिन के चरित्र की मज़बूती और उसके आत्मनिर्भर बनने के शुरुआती कदमों को दर्शाता है। बोर्ड परीक्षा में उसके पति के योगदान पर आधारित प्रश्न आ सकते हैं, इसलिए इसे ध्यान से समझें।

• यह अंश भक्तिन के संघर्ष और सामाजिक अन्याय को दर्शाता है। बोर्ड परीक्षा में इस घटना के कारणों, पंचायत के फैसले की प्रकृति और इसके भक्तिन के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों पर आधारित प्रश्न आ सकते हैं। इसे विस्तार से समझना ज़रूरी है।

• इस भाग से 'भक्तिन के चरित्र-चित्रण' पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। जमींदार द्वारा किए गए अपमान के बाद उसके शहर आने के निर्णय को उसकी स्वाभिमानी प्रकृति के रूप में अवश्य लिखें।

• भक्तिन के स्वभाव, उसके नियमों और लेखिका के साथ उसके रिश्तों पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं। उसके तर्कों और प्रतिक्रियाओं को ध्यान से समझना बहुत ज़रूरी है।

• भक्तिन के चरित्र-चित्रण वाले प्रश्नों में इस विशेषता को ज़रूर लिखें, यह उसके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

• भक्तिन के दुर्गुणों और उसके शास्त्रार्थ वाले प्रसंग से अक्सर 'भक्तिन के चरित्र-चित्रण' पर प्रश्न आते हैं, इसलिए इन बिंदुओं को अच्छे से समझ कर लिखें।

• भक्तिन के स्वाभिमान और वफ़ादारी से जुड़े प्रश्न अक्सर आते हैं। इन दोनों गुणों को उदाहरणों के साथ समझाना ज़रूरी है।

• यह भाग भक्तिन के चरित्र-चित्रण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर प्रश्न आते हैं कि युद्धकाल में भक्तिन ने लेखिका के प्रति क्या भाव दिखाए, तो उसकी उदारता और निष्ठा को उदाहरण सहित ज़रूर लिखें।

• यह अंश लेखिका और भक्तिन के रिश्ते के भावनात्मक पहलू को दर्शाता है, बोर्ड परीक्षा में इससे संबंधित प्रश्न उनके रिश्ते की गहराई और आत्मीयता पर पूछे जा सकते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› भक्तिन: स्त्री संघर्ष, स्वाभिमान, पितृसत्ता विरोध और आत्मीय संबंध का रेखाचित्र।

› लछमिन (असली नाम), गरीबी, कंठी माला, भक्तिन (नया नाम)।

› पति के प्रेम ने भक्तिन को अलगौझा कर संपत्ति बढ़ाने में मदद की।

› भक्तिन की बेटी का विधवा होना; जिठौतों का षड्यंत्र; पंचायत का अन्यायपूर्ण फैसला।

› गरीबी, अन्याय और जमींदार के अपमान से तंग आकर भक्तिन का शहर आना।

› भक्तिन का लेखिका के घर प्रवेश; देहाती पाक-कला, नियमों पर अड़िग स्वभाव।

› भक्तिन का दृढ़ स्वभाव: स्वयं में बदलाव नहीं, दूसरों को ढालती थी।

› भक्तिन के दुर्गुण: पैसे छिपाना, झूठ बोलना, शास्त्रों की अपनी मर्जी से व्याख्या करना।
› भक्तिन का स्वाभिमान और लेखिका के प्रति उसकी अटूट वफ़ादारी।
› युद्धकाल में भक्तिन की उदारता: गाँव जाने का प्रस्ताव, जमा पूँजी का समर्पण, गहरी निष्ठा।
› भक्तिन की अधूरी कहानी = लेखिका का गहरा प्रेम और उसे न खोने की इच्छा।